वेदों की खुशबू   ओ३म्   वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 131	Year 16	Volume 4	MAY 2025 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

आर्य समाज के 150 वर्ष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

संस्थापक : 10-04-1875

आर्य समाज के मुख्य सतम्भ

- बसुधैव कुटुम्बकम व सर्वे भवन्तु सुखिनः संसार का उपकार करना समाज का मुख्य उदेश्य है।
- सत्य सर्वोपरि है। सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने में उधत रहे व सब कार्य धर्मानुसार सत्य व असत्य को विचार कर करें।
- ईश्वर एक है, गुणों के आधार पर कई नाम है। सर्वव्यापक, निराकार व अजन्मा है।
- वेद ईश्वरीय ज्ञान है। इस ज्ञान को धारण करना व प्रसार करना समाज की प्राथमिकता है।
- समाज का उद्देश्य अविद्या का नाश व विद्या को फैलाना है। हजारों डी.ए.वी व आर्य विद्यालय इसका प्रमाण है।
- समाज आडम्बरों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों व ज्योतिष विद्या के खिलाफ है। जीवित माता पिता व बुढ़ों की सेवा ही तीर्थ व श्राद्ध है।
- समाज गुण कर्म आधारित जाति को मानता है न कि जन्म आधारित। समाज में सभी बराबर है।
- स्त्री का स्थान सब से ऊँचा है। विवाह का आधार आपसी पसन्द व गुण कर्म है न कि ग्रह या जन्म कुण्डली।

सहयोगी अनुयाई

रूपेश परीक्षित and Associates, रमन महाजन, विद्या सागर वर्मा (अमेरिका से) कृष्णा चौधरी, संध्या धाम, उमा चोपड़ा, स्वर्ण चौधरी, देश भूषण आर्य, आशोक चोपड़ा एवं सजीव चौधरी। फोन: 9217970381

ARYA SAMAJ STANDS FOR ...

Vasudhaiva Kutumbakam and Sarve bhavantu sikhana. Doing good to the whole World is the prime duty of Arya Samaj and to promote physical, spiritual and social good of all humans.

To dispel ignorance and illiteracy and promote knowledge and literacy. Thousand of DAV and Arya Institutions are the testimony.

Truth is supreme. One should be always ready to renounce untruth and embrace truth'.

Arya Samaj believes in infallible authority of Vedas. To embrace and carry forward Veda's knowledge to masses is the duty of Arya Samaj

Arya Samaj postulates equal justice for all together with gender equality and woman empowerment. Repudiates religious bigotry, oppression of women and low caste, superstitious beliefs, idoltary, child marriage, hereditary caste system, animal slaughter and sacrifice and untouchability

Service of living parents and elders is true shradh and teerath.

Arya Samaj advocates equal say of boy and girl in the matter of marriage with little respect for the matching of horoscopes.

PUBLISHED IN TIMES OF INDIA, DANIK JAGRAN & AMAR UJJALA 10-04-2025

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Mob. : 94656-80686, 92179-70381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा
15, हनुमान रोड
नई दिल्ली-110001

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2025-2027

हमारी भावना अयज्ञीय न हो अर्थात हम कृतघ्न न बनें

वैदिक धर्म में यज्ञ द्वारा उन सभी देवताओं का धन्यावाद करने का विधान है जो कि हमें प्राण देतें हें, जीवन के साधन देकर पालन करते हैं और रक्षा करते हैं। पंच यज्ञ जिस में ब्रहम यज्ञ, अग्नि होत्र, पितृ यज्ञ, अतिथी यज्ञ व बलिवेश यज्ञ का विधान इसी लिए बना है।

जब हम कहते हैं कि हमारी भावना अयज्ञीय न हो इसका अर्थ है हम कृतघन न बनें खास कर उस परमेश्वर के प्रति जो हमें प्राण देता है, जीवन के सब साधन देकर पालता है और रक्षा करता है। उसका स्मरण करना न भूलें क्योंकि जो भी इस सृष्टि में दिखाई दे रहा है वह उसी की देने है। उस ईश्वर की कृपा देखो जिसने हमें शरीर के साथ बुद्धि और विचार शक्ति भी प्रदान की। देखने वाली बात यह है कि यह बुद्धि और विचार शक्ति पशुओ के पास नहीं इसलिये मानव का यह कर्तव्य बनता है कि उस ईश्वर का सदैव धन्यबाद करता रहे और स्तुती करे ताकि अगला जन्म भी मानव का ही हो।

यदि हम किसी कारण वश ईश्वर का धन्यबाद न कर सकें तो कम कम से कम शिकायत न करें कि प्रभो तूने मेरे साथ बड़ा अन्याय किया, मझे मेरी योग्यता के अनुसार नहीं दिया, दूसरे को अधिक व मुझे कम दिया। ऐसी भावना मन में कुठारघात को ही उत्पन्न करती है और मानव का सब से अधिक नुकसान करती है। वह मन की शान्ती खो कर भटकता है और बाकी सब सखा साथियों से भी अपने सम्बन्ध खराब कर लेता है। ऐसी स्थिती में उसका जीवन पशु तुल्य बन जाता है। वह केवल शरीर से ही मानव नजर आता है वैसे पशु ही होता है। इस लिये हमें इस स्थिती से हर हालत में बचने का प्रयत्न करना चाहिये। यह तभी सम्भव है जब हम कृतज्ञ वने अर्थात धन्यबाद करने की आदत बनायें और खास कर ईश्वर की और माता पिता का।

ईश्वर से शिकायत हम इस लिये नहीं कर सकते क्योंकि मानव अपनी खेती खुद बोता है। अच्छा बीज होगा तो अच्छा फल और खराब बीज होगा तो खराब फल। ईश्वर तो न्यायकारी होने के कारण अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार यह देखता है कि मानव आने कर्मों का उचित फल पाये। वह किसी के बुरे कर्मो को माफ नहीं करता। ऐसे में ईश्वर से शिकायत कैसी। उसका तो हमें धन्यबाद ही करना है कि उस कि न्यायव्यवस्था में कोई भी बड़ा से बड़ा अपराध कर बच नहीं सकता जो कि हमारे समाज की व्यवस्था को बिगड़ने नहीं देता और अच्छे ढंग से चलने में सहायक है। जरा चोलिये यदि ईश्वर की नयाय व्यवस्था न हो तो समाज में उथल पुथल मच जायेगी। जिस की लाठी उसी की भैंस वाला हाल हो जायेगा, व्यक्ति पाप करता हुआ डरेगा ही नहीं।। इस लिये ईश्वर से शिकायत नहीं धन्यबाद करना हमारा कर्तव्य है।

इसी तरह हम अपने देवों के प्रति भी कृतज्ञ रहें । कोन है वे देव ? दन देवों में सब से उपर माता पिता का स्थान है। क्या उस मां के उपकार को भूलाया जा सकता है, जिसने हमें 9 माह तक अपनी कोख में रखा और जन्म देते ही भरपूर प्यार दूलार दिया, अपने सुख का त्याग देकर हमें पाला। इसी तरह पिता अपने सुखों का त्याग कर भी यह प्रयत्न करता है कि बच्चे इच्छी शिक्षा प्राप्त कर वहां पहुंचे जहां शायद वह भीनहीं पहुंच सका। ऐसे देव जो पूजा के योग्य है यदि हम उनके बृद्ध होने पर सेवा नहीं करते हैं तो हम कृतघ्न व अयज्ञीय होने के दोषि हैं।

इसलिए ऐसा संकल्प लें कि हमारी भावना अयज्ञीय न हो और हम कृतज्ञ वने अर्थात धन्यबाद करने की आदत बनायें और खास कर ईश्वर का और माता पिता का।

आर्य समाज सेक्टर 9 पंचकुला

अपनी वैदिक संस्कृति संबंधी जानकारी के लिए निम्न साईट पर जाकर देखें:

www.trutharya.org

YOU ARE WELCOME TO ASK QUESTIONS ON ANY FACET OF SANATAN DHARM ON WHATSAPP OR TELEGRAM OR SIGNAL ON 9465218861. THE ANSWERS WILL BE GIVEN IN ACCORDANCE WITH VAIDIC LITERATURE.

Prof. Raman Mahajan Arya

शिमला का
SHARDA
कामधेनु जल
गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए
एक असरदार व अदभुत आयुर्वैदिक औषधि
एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

पत्रिका के लिये शुल्क

Mr Bhartendu Sood

Paytm UPI

9465680686@ptyes

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

या **Google Pay No. 9465680686** या **Paytm No. 9465680686**

पत्रिका में दिए गए विचार लेखकों के अपने हैं।
सम्पादक उसके लिए जिम्मेवार नहीं है। न्यायिक प्रकिया के लिए चण्डीगढ़ के न्यायालय मान्य है।

Arya Samaj made pioneering efforts in literacy and social upliftment in Punjab

Bhartendu Sood

It was 150 years back on 10th April 1875 that the first Arya Samaj was established in Bombay, present day Mumbai, by a Sanyasi reformer and great Veda's scholar Maharishi Dayanand Saraswati.

What went into creating an institution that derives its philosophy from Vedas? Answer is; Dayanand who had studied Vedas believed that the Vedanta as was being practiced by the Hindu priests was diametrically opposed to the Veda's teachings. With the result, the country was reeling under the burden of an orthodox, retrogressive society, where women and low castes were the targets of infinite atrocities. In the name Vedas and other Hindu scriptures, education was prohibited for women and low castes and evils like sati pratha, child marriages, purdah system, hereditary caste system with deeply ingrained untouchability towards low castes was being practiced. The women of Vedic period-- educated and most revered in house, society and the state had disappeared under the shroud of pseudo-social values and superstitious beliefs.

Though the first Arya Samaj was established in Bombay, it was the old Punjab and the parts of Northern India, where Dayanand's social reformist movement, enshrined in Vedic values stirred the conscience of the people most.

Punjab had already seen a socio-religious reform movement under Guru Nanak Dev ji in the 15th century which though carried forward by great Gurus, had started wilting under the slavery of foreign rule . Moreover, its major influence was confined to the Sikh community. Hindus were at the mercy of orthodox Brahmin priesthood. Social evils in the form of oppression of women, prohibition of education to women as it was considered almost a blasphemy, prohibition of widow-remarriage, child-marriage, the veil-custom, the dowry custom, and the untouchability was eating into the Hindu society of Punjab. It is also true that like Bengal, Punjab was another state where people were more receptive to reformist views than in the other areas due to the not so strong influence of Brahmin orthodoxy. Therefore, it was no wonder that Dayanand's socio-religious reform movement was received with open arms in Punjab.

Swami ji who started his preaching in Lahore from the Kothi of Dr Rahim Khan , a Muslim, founded the first Arya Samaj in Lahore on April 19, 1877 and soon every city and town of Punjab had an Arya Samaj. Dayanand's success can be attributed to his successfully using a double edged sword. He not only trampled underfoot the Brahmin orthodoxy that had given birth to all social evils but could recognize the importance of education in removing these evils Considering education to be a catalyst of social transformation he laid emphasis on teaching both boys and girls in the art and science of life, and in technical skills so as to broaden their mental horizons, unfold their innate abilities , and cultivate virtues in

line with Vedic value system whose centre point was ***'manur bhav'*** ba a man' He was convinced that Indian society couldn't progress without making women educated. He gave the slogan, " 'Dispel ignorance and spread knowledge and literacy.' With the result, the educated class became his big followers. His most significant contribution to education was the revival of the Indian educational system by blending with the new sciences that had emerged on the scene. It will not be wrong to say that he created a temple in the form of Arya Samaj where people from all strata and sections could go without any consideration for the caste and a school where doors were open to all.

Dayanand's Arya Samaj was the platform to reintroduce Vedas sidelined by the Brahmin orthodoxy for their selfish interest. He gave a slogan –'go back to Vedas' and made it mandatory for Arya samaj fraternity to learn, embrace and preach Vedas. He rejected rituals based on mythology, caste by birth, animal sacrifices, and the exclusion of women and low castes from reading the Vedas which he considered infallible having inherent authority. He strongly advocated for woman's equal say in the matter of marriage.

Quick to realize that India couldn't regain its lost glory of Vedic period under British rule, he made nationalism a part of dharma. No wonder, in the years that followed Arya samaj became a nursery for many who fought for the liberation of the country. List includes Lala Lajpat Rai and Bhagat Singh. In his crusade against Brahmin orthodoxy he was like a Luther King fighting against his own Church. But, he had to pay for it when he succumbed to the poison administered to him by one of his opponents. After his demise in October 30,1883), his followers that included likes of Mahatma Hansraj, Lala Lajpat Rai and Guru Dutt assembled in Lahore to give a thought how his legacy could be continued. Constructing a memorial in stone and mortar was rejected outright as he was dead against these. It was decided to take forward his mission of dispelling ignorance and promoting knowledge.. This is how the establishment of Dayanand Anglo Vedic institutions popularly known as DAV institutions made the beginning in Lahore. In the next 25 years almost every town in Punjab had a DAV school which had already earned its name for preparing students in Vedic tradition with the prevailing spirit of science, rationality, humanism and nationalism. It is to the credit of the DAV management Committee that DAV has all along kept itself away from sectarianism, caste distinctions, regionalism or parochialism.

Dayanand's another followers Swami Shardhanand and Lala Dev Raj , the crusader of women education, started a movement for setting up educational institutions for women. So strong was the opposition to their mission by the Hindu middle class that Arya Kanya Vidyalaya, Jallandhar (Presently Kanya Maha vidyalaya) which he started in 1886 had to be closed and restarted three times before it became a prestigious institution for women by the end of nineteenth century. And soon almost all towns in Punjab had Arya schools both for boys and girls.

What Arya Samaj did in the field of literacy in Punjab gets reflected from the tributes paid by Justice Mohammed Sadique who retired from the Pakistan High Court. In March 2005 Justice Khalil Ur Rehman Ramde, then a Judge in the Supreme Court of Pakistan when visited his ancestral village Karyama in Nawanshahr and the Arya School Nawanshahr, he said in an informal chat in the Circuit House " My father Justice Mohammed Sadique would often tell that I became a Judge only because the Arya Samaj opened a school in Nawanshahr in 1919, otherwise we had no school in the vicinity of 50 miles."

Today we have schools everywhere even in the remote villages, majority of our women are literate but then this can't be ignored that Arya Samaj did splendid work in the field of literacy in Punjab at the time when education was a social taboo. Likewise what Arya Samaj did to empower women and low castes and freeing societies from the centuries old taboos cannot be belittled or forgotten even though today everything has become a part of government welfare schemes.

M. : 9217970381

निम्न बातों को अपनाए बिना हिन्दू धर्म सनातन धर्म नहीं हो सकता

कृष्ण चद्र गर्ग

हिन्दू धर्म किसी नेता के कहने से सनातन धर्म नहीं हो सकता । यदि हिन्दू धर्म को सनातन धर्म का रूप देना है तो वेदों में बताऐ सिद्वान्तों के अनुसार ही हम हिन्दुओं को सही मान्यताओं का चयन कर जीवन में लाना होगा ।

क्या है वे मान्यतांए?

1. ईश्वर एक है, अनेक नहीं। वह निराकार है और सर्वव्यापक है। उसकी मूर्ति नहीं बन सकती। न तस्य प्रतिमाऽस्ति – (यजुर्वेद 32,3)। ईश्वर अपने सभी काम स्वयं करता है। उसके कोई पीर, पैगम्बर, अवतार या एजेंट नहीं हैं।

2. मूर्तिपूजा हिन्दुओं की सबसे बड़ी अज्ञानता है। इसने हिन्दुओं का सबसे अधिक अहित किया है। मूर्तिपूजा के कारण हिन्दू ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को भूल गये हैं, और परोपकार आदि शुभ कर्मों से दूर हो गये हैं। जो तन, मन, धन इन्सानों की सेवा में लगना चाहिए था वह पत्थर की मूर्तियों पर लग रहा है। मुसलमानों ने सैंकड़ों सालों तक हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा और वहां से बेशुमार सोना, चाँदी, हीरे–जवाहरात आदि लूटकर वे अपने देशों को ले गये हैं पर हमनें सबक नहीं सीखा।

3. मर्यादा पुरुषोतम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण ईश्वर न थे और न ही ईश्वर के अवतार थे। वे महापुरुष थे। वे अपने माता–पिता से जन्मे, बड़े हुए, उनके विवाह हुए, उनके संतानें हुईं। उन्होंने भी कार्य किए और सुख–दुख भोगे। अन्त में वे भी मृत्यु को प्राप्त हुए। उन्हें याद करने का अर्थ है कि उनके सद्गुणों को हम अपने जीवन में धारण करें।

4. योगेश्वर श्री कृष्ण – महाभारत में श्री कृष्ण जी का जीवन बड़ा पवित्र बताया गया है। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो ऐसा नहीं लिखा। वे एक पत्नीव्रती थे, उनकी पत्नी थी रुक्मणी। वे सुदर्शन चक्रधारी, योगेश्वर, नीतिनिपुन, पाण्डवों को युद्ध में विजय दिलाने वाले, कंस, जरासंघ आदि दुष्ट पापाचारी राजाओं का वध करने वाले थे।

   परन्तु भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में श्री कृष्ण जी पर दूध–दही–मक्खन की चोरी, कुब्जा दासी से संभोग, परस्त्रियों से रासलीला–क्रीड़ा आदि झूठे दोष लगाए हैं। गोपाल सहस्रनाम में श्री कृष्ण जी को चौरजारशिखामणि तक का खिताब दिया गया है जिसका अर्थ है चोरों और जारों का सरदार। ऐसी बातों को पढ़–पढ़ा और सुन–सुना कर दूसरे मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निंदा करते हैं और हिन्दुओं का मज़ाक उड़ाते हैं।

   हिन्दुओं को श्री कृष्ण जी के उसी रूप को स्वीकार करना चाहिए जो महाभारत में वर्णित है।

5. देवी, देवता – ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश आदि एक ईश्वर के ही नाम हैं। ये कोई अलग से देवता नहीं हैं। देवी या देवता वह है जो हमें कुछ देता है। हमारे माता–पिता देवता हैं, वे हमें जन्म देकर हमारा पालन–पोषण

करते हैं। हमारा अध्यापक देवता है, वह हमें विद्या और शिक्षा देता है। कोई भी परोपकारी व्यक्ति देवता है, वह संसार का भला करता है।

6. सुख–दुख का कारण मनुष्य के अपने अच्छे–बुरे काम हैं, ग्रह नहीं। ग्रह तो जड़ हैं, ज्ञानहीन हैं और बुद्धिहीन हैं। वे किसी से प्रेम अथवा द्वेष नहीं कर सकते। ईश्वर की न्याय व्यवस्था से – दूसरों का भला करने से सुख प्राप्त होता है और दुसरों का बुरा करने से दुख मिलता है।

7. ज्योतिष नाम से चल रही भविष्य बताने की और पाप कर्म के फल से बचाने की दुकानें सब ठग विद्या है। इसमें फंसना अपना धन बर्बाद करना और परेशानी मोल लेना है। ईश्वर की व्यवस्था में मनुष्य दखल नहीं दे सकता।

8. ईश्वर हमारा माता–पिता है। हर समय वह हमारे साथ है। हमारे और ईश्वर के बीच में कोई और बिचौलिया नहीं बन सकता।

9. जो मर चुके हैं उनका श्राद्ध नहीं हो सकता। जीवित बुजुर्गों की सेवा करना ही उनका श्राद्ध है। जैसे हमें बचपन में उन्होंने पाला है वैसे ही बुढ़ापे में उनकी देखभाल करना हमारा कर्त्तव्य है।

10. जगराता पापकर्म है। लाउड डस्पीकर की ऊँची आवाज में दूसरों को परेशान करना ईश्वर भक्ति नहीं है। ईश्वर अन्तर्यामी है। हमारे मन में जो है उसे भी वह जानता है। जगराते में सुनाई जाने वाली तारा देवी की कहानी बहुत ही घटिया, असम्भव और विनाशकारी है।

11. फूल तोड़ना पाप कर्म है। डाली पर लगा हुआ फूल सुगन्ध और शोभा देता है। तोड़ने के थोड़ी देर बाद वह दुर्गन्ध देना शुरु कर देता है। पानी में सड़कर तो और अधिक दुर्गन्ध देता है।

12. मांस खाना महापाप कर्म है। मांस मनुष्य का भोजन नहीं है। मांस मनुष्य के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से हानिकर है। पशु जब अपने को मारे जाने की स्थिति में देखते हैं तब उन्हें जो कष्ट होता है उसे याद करके भी मनुष्यों को मांस नहीं खाना चाहिए। इंग्लैण्ड की साऊथैम्पटन यूनिवर्सिटी में किए परीक्षण के अनुसार शाकाहारियों का समझदारी का स्तर ;प्फफ्द्ध मांसाहारियों से 5 प्रतिशत अधिक होता है।

13. कोई व्यक्ति धार्मिक है या नहीं – यह उसके आचरण और व्यवहार से पता चलता है, दिखावे के बाहरी चिन्हों से नहीं। सत्य का आचरण और पक्षपात रहित व्यवहार ही धर्म है और यही मानव धर्म है।

14. कलियुग कुकर्म करने का ठेका नहीं है। जैसे सोमवार, मंगलवार आदि दिनों के नाम हैं वैसे ही सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग समय की गणना के नाम हैं। कलियुग से डरने का कोई कारण नहीं है। जैसे अच्छे और बुरे काम हर दिन होते हैं, ऐसे ही अच्छे और बुरे काम सब युगों में होते हैं।

15. नदी, तालाब आदि में नहाने से पाप नहीं कटते और न ही मन शुद्ध होता है। कर्मों का फल भोगे बिना नहीं कटता। जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोआ सो काटा। मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

16. किस्मत या भाग्य – ईश्वर हमारे कामों के अनुसार हमें सुख व दुख के रूप में फल देता है – अच्छे कामों का फल सुख और बुरे कामों का फल दुख। कुछ कामों का फल उसी समय मिल जाता है और कुछ कामों का फल बाद में उचित अवसर आने पर मिलता है। जो फल हमें बाद में मिलता है उसे हम किस्मत या भाग्य कहते हैं।

17. हमारे धर्म ग्रन्थ चार वेद हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। वेद ज्ञान के पुस्तक हैं जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों – अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा – को दिया। वेदों में सभी मनुष्यों के कल्याण के लिए उत्तम–उत्तम उपदेश हैं, जन्म से मरण तक मनुष्यों को जीने का सही–सही ढंग बताया गया है।

कुछ लोग वेदों पर मांसाहार, सुरापान, गोहत्या आदि के झूठे दोष लगाते हैं। वेदों में ऐसी अनर्गल बातें नहीं हैं। वेदों में गाय आदि गुणकारी पशुओं की रक्षा के आदेश हैं, मदिरापान व मांसाहार का निषेध है।

पुराण हमारे धर्म ग्रन्थ नहीं हैं। ये ग्रन्थ अश्लील और गलत बातों से भरे हुए हैं। पुराण महर्षि वेदव्यास के बनाये हुए नहीं हैं। बहुत बाद में बने ग्रन्थ हैं ये। महर्षि वेदव्यास तो बहुत बड़े विद्वान, धार्मिक, सदाचारी और परोपकारी पुरुष थे। वे ऐसे गपौड़े नहीं घड़ सकते थे।

18. शिवलिंग पूजा अश्लील और अशोभनीय कार्य है।

19. हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। चार वेद, छः शास्त्र, ग्यारह उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता आदि सभी ग्रन्थों में हमारा नाम आर्य लिखा है, हिन्दू नहीं।

20. पुण्य, पाप – जिस काम से दूसरों का भला हो वह पुण्य और जिस काम से दूसरों का अहित हो वह पाप कहलाता है।

21. हिंसा, अहिंसा – किसी से वैर भाव रखना हिंसा कहलाती है। किसी निर्दोष को दण्ड देना हिंसा है, परन्तु दोषी को दण्ड देना हिंसा नहीं, अहिंसा है।

22. स्वर्ग, नरक – स्वर्ग या नरक नाम के कोई अलग से विशेष स्थान नहीं हैं। विशेष सुख का नाम स्वर्ग है और विशेष दुख का नाम नरक है।

23. तप क्या है – परोपकार आदि अच्छा काम करने में जो बाधाएं और कष्ट आएं उन्हें सहन कर लेना तप कहलाता है।

24. व्रत – काई भी अच्छा काम कर लेने का प्रण कर लेना और उसे निभाना व्रत कहलाता है।

25. कबर पूजा – हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों की कबरों को हिन्दू ही पूजते हैं।

अजमेर की दरगाह शरीफ में सूफी संत मुइनुद्दीन चिश्ती की कबर है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती 800 वर्ष पहले भारत आया था उसने यहां पर 700 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था।

बहराईच, उत्तर प्रदेश के पास मसूद गजनी की मजार है। मसूद गजनी, सोमनाथ के मन्दिर को तोड़ने और लूटने वाले महमूद गजनी का बेटा था। जून 1033 में मसूद ने भारत पर आक्रमण किया था, परन्तु वह मारा गया था। हिन्दू उसकी मजार से मन्नतें मांगते हैं।

महाराष्ट्र के एक गाँव में अलीशाह की मजार है। अलीशाह बड़ा अत्याचारी था। विवाह के पश्चात हिन्दू दुलहनों को पहली रात अलीशाह के साथ गुजारनी पड़ती थी। औरंगजेब का समय था और हिन्दू मजबूर थे। अब हिन्दू औरतें उस अलीशाह की कबर को पूजती हैं।

26. प्राणीमात्र के दुख दूर करना ही मनुष्य का परम धर्म है। जो व्यक्ति समाज से अज्ञान, अन्याय और दरिद्रता दूर करता है वही ईश्वर भक्त है।

831सैक्टर 10 10 पंचकूला, हरियाणा 0172.4010679

बच्चों के साथ समय व्यतीत करना स्वस्थ, रोगमुक्त व उत्साहपूर्ण बने रहने का अचूक नुस्ख़ा है

सीताराम गुप्ता

कौन है जो स्वस्थ नहीं रहना चाहता? हम सभी स्वस्थ रहना चाहते हैं। स्वस्थ रहने के लिए क्या कुछ नहीं करते लेकिन फिर भी कई बार सफलता नहीं मिलती। स्वास्थ्य व आरोग्य की तरफ़ जितना दौड़ते हैं स्वास्थ्य व आरोग्य और हममें उतना ही अंतर बढ़ता जाता है। केवल अच्छे भोजन, व्यायाम व दवाओं आदि से पूर्णतः स्वस्थ रहना संभव नहीं। यदि जीवन में सचमुच स्वस्थ व रोगमुक्त रहना चाहते हैं तो अच्छे भोजन, व्यायाम व दवाओं के साथ–साथ हमेशा प्रसन्न रहने का प्रयास करना भी ज़रूरी है। प्रसन्नता व स्वास्थ्य वास्तव में एक दूसरे के पर्याय व पूरक हैं। हमेशा स्वस्थ बने रहने के लिए प्रसन्नता और प्रसन्नता के लिए बच्चों के साथ समय व्यतीत करना स्वस्थ व प्रसन्न रहने का अचूक नुस्ख़ा है। बचपन आनंददायक होता है लेकिन हम अपना बचपन वापस नहीं लौटा सकते। हाँ, बच्चों के साथ समय गुज़ारने पर बचपन का आनंद अवश्य ले सकते हैं। बच्चे बड़े सरल हृदय होते हैं। उन्हीं की तरह सरल हृदय बनकर उनसे बात कीजिए। जब हम अपनी कुटिलता या अत्यधिक चतुराई का त्याग करके बच्चों जैसे सीधे–सच्चे बन जाते हैं तो हमें सचमुच प्रसन्नता की अनुभूति होती है।

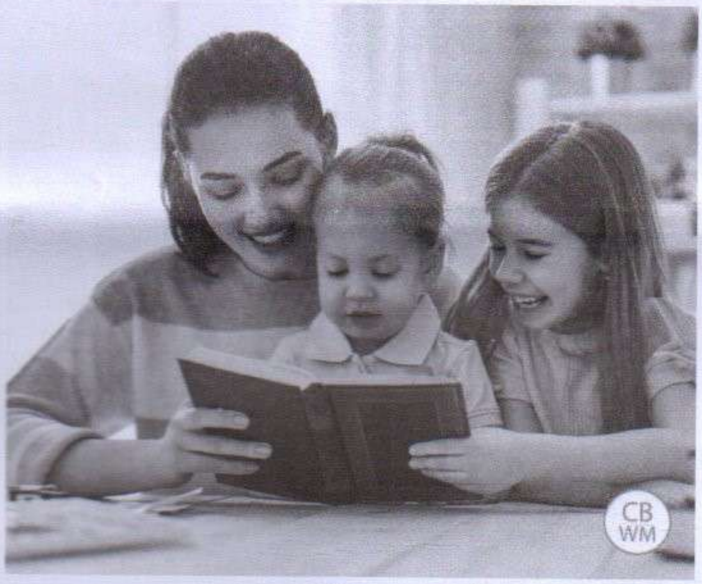

बच्चों के साथ समय बिताना प्रसन्नता प्रदान करने में सक्षम होता है। बच्चों से कुछ सुनिए और उन्हें भी सुनाइए। बच्चों के साथ उनके ही खेल खेलिए। उनके साथ कोई प्रतियोगिता कीजिए। आप हारें या जीतें प्रसन्नता अवश्य मिलेगी। कुछ दिन पहले की बात है। मेरे पैरों की एड़ियों में कई दिनों से दर्द था। बाहर से लौटा था अतः चलने के कारण दर्द कुछ बढ़ भी गया था। जैसे ही घर आकर बैठा हमारा चौदह महीने का पौत्र मेरे पास आ गया और हमारे साथ खेलने लगा। उसने पास रखे रेक की सारी पत्रिकाएँ ज़मीन पर बिखेर दीं। फिर मेरी ओर इस प्रकार देखने लगा मानो पूछ रहा हो कि उसने कुछ ग़लत तो नहीं किया। "नहीं भाई तुम कैसे ग़लत हो सकते हो? तुमने तो बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, " मैंने भी कुछ इस अंदाज़ से उसे देखा और उसके इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए उसकी पीठ थपथपाई। उसने फ़ौरन एक पत्रिका उठाई और मुझे पकड़ा दी। मैंने मुस्कुराते हुए उसके हाथ से पत्रिका ले ली और फिर उसकी पीठ थपथपाई।

जब उसे विश्वास हो गया कि उसने कोई वर्जित या अकरणीय कार्य नहीं किया है तो उसने झट से एक और पत्रिका उठाई और फिर मुझे पकड़ा दी। मैंने फिर उसकी पीठ थपथपाई। उसने प्रसन्नता से किलकारी मारी और नाचने व ताली बजाने लगा जैसे उसने सचमुच कोई अद्वितीय कार्य किया हो। उसने फ़ौरन एक और पत्रिका उठाई

और मुझे पकड़ा दी। मैंने पुनः उसकी पीठ थपथपाई। यह सिलसिला देर तक चलता रहा। उसके नन्हे–से मुखारविंद पर कुछ असंभव–सा व कुछ रचनात्मक–सा करने की संतुष्टि व प्रसन्नता के जो भाव थे वे सभी को आनंदित करने वाले थे। उसने सचमुच अद्वितीय कार्य किया था। उसके चेहरे पर प्रसन्नता देखकर मैं भावविभोर हो रहा था, प्रसन्नता के सागर में डुबकियाँ लगा रहा था। दर्द न जाने कहाँ चला गया था। बुजुर्गों के लिए विषेश रूप से दादा–दादी के लिए अपने पोते–पोतियों का साथ बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। जैसे एक माँ अपने बच्चे को बार–बार गोद में उठाती है वैसे ही घर के बड़े–बुज़ुर्ग भी बच्चों को बार–बार गोद में लेते हैं और दुलारते हैं। ये दोनों के लिए ही लाभदायक होता है।

बच्चों के साथ खेलने व उनको गोद में लेने से अच्छी तो कोई बात ही नहीं हो सकती क्योंकि बच्चों के साथ खेलने से बड़े–बुज़ुर्गों में भी चुस्ती–स्फूर्ति बनी रहती है और बच्चे को गोद में लेना भी एक अत्यंत सुखद अनुभूति व एक अप्रतिम स्वास्थ्यवर्धक एवं उपचारक प्रक्रिया होती है। जब भी हम बच्चे को अपनी बाँहों में लेते हैं तो हम प्रेममय होने लगते है। हमारी बॉडी कैमिस्ट्री परिवर्तित होने लगती है। उससे हमें प्रसन्नता मिलती है जिससे हमारे शरीर में लाभदायक हॉर्मोंस का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है। इस प्रकार से बच्चों का साथ बुज़ुर्गों को स्वस्थ रखने में बहुत ही अधिक सहायक होता है। आज इसी अभाव के कारण अधिकतर बुज़ुर्ग न केवल दुखी रहते हैं अपितु अधिक बीमार भी रहते हैं। जो नए बने माता–पिता अपने बच्चों को अपने माता–पिता से दूर रखते हैं अथवा ऐसा करने का प्रयास करते हैं वे सचमुच अपने माता–पिता के सबसे बड़े दुश्मन हैं। पितृदिवस और मातृदिवस मनाने का कोई औचित्य नहीं यदि कोई अपने माता–पिता को उनके पोते–पोतियों से अलग कर रहा है। वास्तव में माता–पिता को प्रसन्न व स्वस्थ देखना है तो उनको उनके पोते–पोतियों से अलग मत कीजिए। यही उनकी सबसे बड़ी सेवा होगी।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,दिल्ली – 110034मोबा0 नं0 9555622323

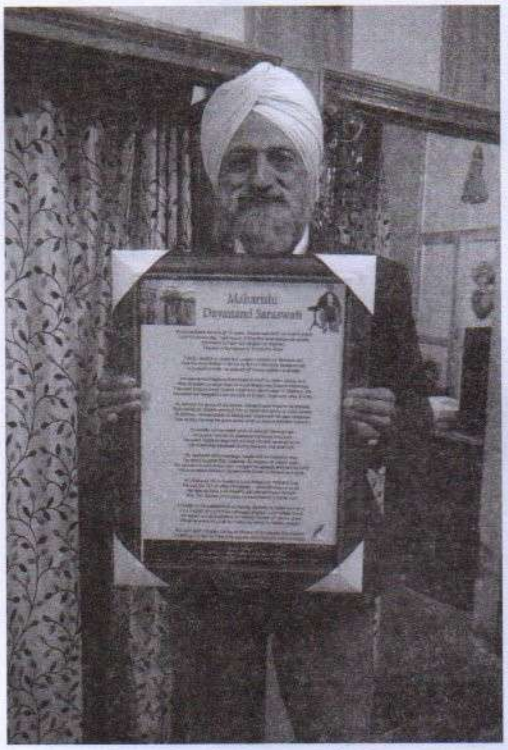

सरदार बलजीत सिंह जो कि अमृतसर से हैं उन्होने महर्षि दयानन्द के जीवन पर चित्रों के सहयोग से नुमाईश बनाई है। यह अपने आप में ही सराहनिय काम है।आप उन से सर्म्पक कर इसका आयोजन कर सकते है। उनका फोन नम्बर है 9815443811

We seek magic so they serve magic

Bhartendu Sood

Pastor Bajinder Singh is in the news. He is not the only one from the long list of such sorcerers who in the garb of religious gurus take innocent people for ride. We have invariably one or the other making the headlines and in all likelihood it will continue because by and large, we love quick fix solutions to our problems in life rather than having a right and scientific approach

This incident is about 20 years old. I visited Amritsar where I was employed at one time. During normal enquiries about the old colleagues I was shocked to know that a staff cadre woman employee, when she developed a terminal disease, married off her beautiful daughter to an aged *'tantrik'* on being assured by him that the wedlock would relieve her of that disease.

The girl emotionally became ready to make a sacrifice for her mother whose father found her wife's life more valuable to him than the future of his daughter. In the absence of right medication that woman died before time and the *tantrik* disappeared after leaving her daughter high and dry.

Why should it happen? There are two reasons. The first is our failure to appreciate that life is a mixed bag of good and unfortunate happenings, and it is true for everybody whether a king or a pauper. Every night is followed by the day but then night also has its duration. We fail to exercise patience, perseverance and tolerance in such moments. Our mind is so closed that it looks at only closed doors though there are many doors which are open. We don't look at those countless instances of the persons who after being in similar situations re-emerged as a phoenix from the ash.

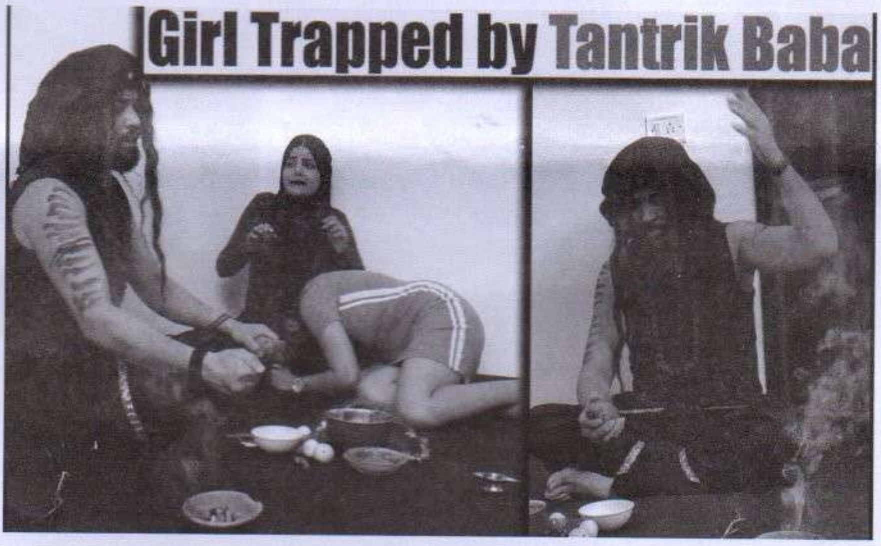

The second reason is that we don't keep in mind that we are governed by the law of karma. We can't escape the fruit of our deeds. Even Rama and Sita had to spend 14 years in exile despite being perceived as the rightful inheritor of the throne of Ayodhya.

What should be done under such situations? There is an urgent need to realise that God is great and there is no better resolver than Him. His ways and means to solve our problems are generally beyond our comprehension. Therefore, the best therapy is to have faith in God and pray to Him. No other talisman gives as much strength as the honest and sincere prayer to the Almighty.

However, this has to be accompanied by the right line of action also. For example, it is the prayer that gives strength and shows the way, but cancer cannot be cured unless we go in for the right medication by consulting a qualified doctor.

M. : 9217970381

यौगिक सिद्धियां अध्यात्मवाद नहीं हैं

भारतेन्दु सूद

यह बात कोई 25 साल पहले की है। राजस्थान के शहर अलवर के पास एक उद्योगिक प्रतिष्ठान में ही मैं कार्यरत था। अक्सर साथ में काम करने वाले बहुत से व्यक्ति, एक पहुंचे हुये बाबा की जिकर करते जो कि हर सप्ताह जमीन के नीचे कई घंटों समाधी लगाते और ऐतवार के दिन बाहर आते थे। लोगों का मानना था कि जिस दिन बाबा जी बाहर आते है उस दिन उनके चरण स्पर्श से मनत पूरी हो जाती है। दूर दूर से लोग उस दिन उनके पैर छूने के लिये आते और यह संख्या हजारों में होती । क्योंकि मैं आर्य समाजी था इसलिये वे लोग मुझे वहां ले जाने में बहुत रूचिकर थे। मैने अपने अल्प ज्ञान द्वारा यही कहा-----योगिक सिद्वयों द्वारा अनुठी शक्ति प्राप्त करना एक बात है और जीवन में अध्यात्मिक होना दूसरी बात है । यही नहीं इन योगिक सिद्वयो को प्राप्त कर अपने आप को भगवान तुल्य या भगवान का ऐजेंट प्रस्तुत करना महज एक मिथ्या अंहकार और अन्जान लोगों को मूख बनाना है, जैसा कि अक्सर देखा जाता है। जो ऐसा करते हैं वह अध्यात्मिक नहीं होते। क्योंकि अध्यात्मिक व्यक्ति ईश्वर के स्वरूप को समझता है, ईश्वर के साथ जुड़ा हुआ होता है, वह भूल कर भी इस संसार के रचईता का स्थान नहीं लेगा।

मुझे बाबा की स्माधी वाले स्थान पर जाने में कोई हर्ज नहीं था पर वहां जाने का रास्ता बहुत खराब था, बिना किसी लाभ के मैं यह कष्ट सहन करने के लिये तैयार नहीं था। मुझे पता था भारत मे, ठीक अज्ञान के अभाव में ऐसे कई बाबा पैदा होते रहते है और होते रहेंगे। पर यह भी सत्य है कि लाखों लोग सब प्रकार के कष्ट सहन कर अपनी मनत मांगने के लिये ऐसे लोगों के पास वहां पहुंचते थे।

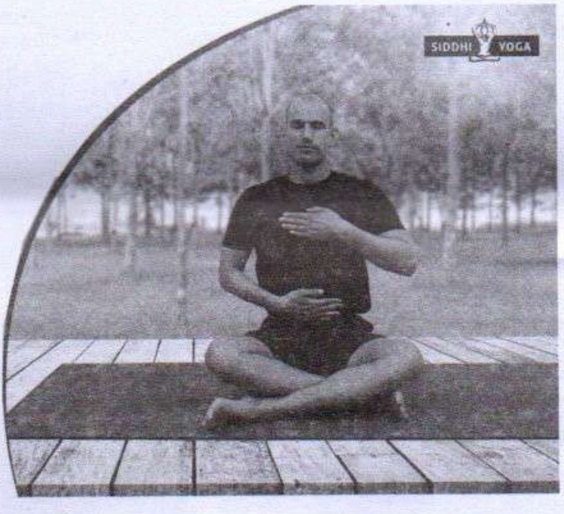

कुछ साल बीतने पर मुझे वहां का एक साथी मिला तो बातचीत के दौरान मैंने बाबा के बारे में भी पूछ लिया। जो उसने बताया वह इस प्रकार था-----आप ठीक कहते थे। उस बाबा ने वहां के मुखिया की लड़की को अपने चंगुल में फंसा लिया। और बहुत सा धन लेकर अहमदाबाद भाग गया अब वहां एक राजनेता है।

मुझे इन चम्तकारी योगियों से कोई आपति न हो आखिर यह थी एक कला है और किसी भी कलाकार को उसकी कला के प्रयोग द्वारा पैसे कमाने का अधिकार है। पर बात उस समय बिगड़ जाती है जब ऐसे चमतकारी ईश्वर का स्थान लेकर भोली भाली जनता को पागल बनाते है। जो कि अधिकतर हमारे भारत में या हिन्दुओं में ही देखा जाता है। मजे की बात यह है कि शिक्षा के प्रसार ने भी इस अन्धविश्वास को कम नहीं किया है बल्कि यह बढ़ता ही जा रहा है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद भी बहुत बड़े योगि थे पर उन्होने अपने आप को ईश्वर या इश्वरिय शक्तियों वाले बाबा के रूप में कभी पहचान नहीं बनाई। वे कितने बड़े योगी थे इसका अनुमान उनके द्वारा लिखी इस बात से लगा सकते है।------मैं प्रथम कोटी का योगी नहीं हूं । केवल मध्यम कोटी का हूं। परन्तु मैं अपनी चेतना शक्ति को शरीर के किसी भाग में भी केन्द्रित कर सकता हूं। अर्थात उस भाग को छोड़कर मेरे शरीर के अन्य भाग

मृत्येवत हो जायेंगे। पर उन्होने यह नहीं कहा कि जो मेरे पैरों को छूएगा उसके सब कष्ट दूर हो जायेंगें। कारण उनकी सारी लड़ाई ही इन पाखण्डो के विरूद्ध थी, जिनके कारण भारत के लोग सदियों से गुलाम और दुखी थे।

इस बात को समझने के लिये यह दो कहानियां बता रहां हूं। पहली कहानी एक ऐसे चमतकारी बाबा के बारे में है जिसने 12 साल के अभ्यास के बाद पानी पर चलना सीख लिया। रहता वह नदी के किनारे ही था ताकी रोज अभ्यास कर सके। एक नाव चलाने वाला भी कई सालों से उसको अभ्यास करते हुये देखता था। जब बाबा विश्वस्त हो गया कि वह पानी पर चल सकता है तो तो उसने चल कर नदी पार कर जाने का मन बनाया । वह लोगों की वाह वाह लूटने के लिये आतुर था इसलिये उसने सोचा कि जब नाव वाला लोगों को लेकर नदी पार कर रहा होगा, उसी समय वह भी नदी पर चलेगा ताकि लोग देख सके।

अगले दिन जब नाव वाला लोगों से भरी नाव लेकर नदी पार कर रहा था तो वह बाबा भी पानी पर चलता हुआ नाव के किनारे पर पहुंच गया और बोला----- देखो आप सभी लोग इस नाव पर सवार हो कर यहां पहुंचे और मैं बिना किसी नाव के पानी पर चलते हुये यहां पहुंच गया। लोगों ने उसे पानी पर चलते देखा था। उनकी हैरानगी की कोई सीमा नहीं थी। वे उसके पैरों पर नतम्स्तक हो गये। अगले दिन भी उसने वैसा ही किया। जैसे ही नाव चलती वह भी पानी पर चल कर वहां पहुंच जाता। यह बात जंगल की आग की तरह फैल गई । लोग दूर दूर से आने लगे। बहुत से पैसे चड़ाते, कुछ अनाज और कुछ गहने भी। बाबा के दिन बदल गये और नाव वाले का काम भी बढ़ गया

लोग दूर दूर से अपनी मनत लेकर बाबा के पास आते। एक दिन बाबा को विचार आया कि दूर दूर से लोग उसके पास अपनी मनत मंनवाने आते हैं, पर यह नाव वाला कभी दर्शन करने तक नहीं आया। वह खुद ही चलकर नाव वाले के पास गया ओर बोला-----हे नाविक मेरे पास लोग दूर दूर से आते है पर तुम इतने पास होकर भी नहीं आये। आखिर बात क्या है? नाविक हंसा और बोला-------देखो बाबा मैं तुम्हे बारह सालों से यहां देख रहां हूं। अगर बारह साल लगाकर तुम वही कर रहे हो जो मेरी नाव सदियों से कर रही है तो मेरे ख्याल में तुमने जीवन के बारह साल नष्ट कर दिये। रही बात पैसा कमाने की तो सुनो, मैं मेहनत से कमाये अपने थोड़ी आमदनी को, लोगों को मूर्ख बना कर लाखों रूप्या कमाने से कहीं अच्छा समझता हूं । बाबा को महसूस हो गया था कि इतनी शक्तियां पा कर भी वह इस अनपढ़ नाविक से कहीं छोटा था, कारण बाबा ने सारा ध्यान शक्तिया पाने में लगा दिया बजाय इसके कि साथ में अपने आप को ईश्वर के साथ भी जोड़ता।

ऐसी ही एक घटना गुरू नानकदेव के जीवन से जुड़ी है। गुरू नानकदेव ने अपने जीवन में बहुत सी यात्रांऐ की । उनकी इन यात्राओं का उदेश्य लोगों में फैले अन्धविश्वास और पाखण्डों को दूर कर सच्चे एक ईश्वर के बारे में बताना होता था। ऐसी ही एक यात्रा में वह पुरी उड़ीसा पहुंचे और समुद्र के तट पर भाई मर्दाना के साथ अपना डेरा लगाया।जब रात हो गई तो भाई मर्दाना क्या देखते हैं कि एक साधु ने रेत पर दरी बिछाई, अपने आगे एक तांबे का गड़बी जैसा पात्र रख दिया और खुद ऐसी मुद्रा में बैठ गया कि उसका सिर पीछे उसके पैरों को छू रहा था और चेहरा आकाश की तरफ। आंखे उसने बन्द कर रखी थी। भाई मर्दाना ने जिज्ञासावश गुरू नानकदेव से पूछा कि वह साधु इस मुद्रा में क्या कर रहा है?। गुरू नानक देव ने कहा कि मैं तो सोने जा रहा हूं तुम खुद ही देखते रहो। कुछ पता लगे तो मुझे उठा देना। भाई मर्दाना जिज्ञासावश सो न सके और उस साधु की तरफ ध्यान सें देखते रहे। कुछ देर बाद लोगों के आने का सिलसिला शुरू हो गया। वे आते साधु को प्रणाम करते, उसके पात्र में पैसे डालते और वहीं बैठते जाते।

कुछ देर बाद गुरू नानक देव की आंख खुली तो मर्दाना झट से बोला--------गुरू देव----- देखो क्या हो रहा है। लोग आ रहें है, उस के पात्रे में चड़ावा चड़ा रहें है और बहुत वड़ी भीड़ उसको घेरे हुये है। मजे की बात यह है कि उसने तब से अपनी आंखे नहीं खोली और मुंह आकाश की तरफ ही है। आपके विचार में यह सब क्या है?

गुरू नानक देव मुस्करा दिये और बोले-----मर्दाना, तुम जाकर वहां एकत्रित हुये लोगों से ही क्यों नही पूछ लेते कि यह क्या माजरा है। मर्दाना झट से उन में से एक के पास गया और पूछा कि यह सब क्या है। उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि यह ब्राहम्ण बहुत पहुंचा हुआ है। सवेरे सूर्य के उदय होने पर आंखे खोलता है और बताता है कि स्वर्ग लोक में कल क्या हुआ।

मर्दाना ने उस व्यक्ति से पूछा कि क्या यह साधु यह भी बताता है कि ईश्वर को कैसे प्राप्त किया जाये। " नहीं, इस बारे में नहीं बताता। वह तो यह बताता है कि देवता और अपस्रायें स्वर्ग में क्या कर रही थी और हमारा आज का दिन कैसा होगा। मैं रोज यहां यह सुनने आता हूं।

भाई मर्दाना यह सुनकर असम्जस में पड़ गया और और उसने गुरू जी को उठा कर जो कुछ देखा व सुना था सब बता दिया। गुरू जी उठे और उस साधु के पास जाकर जो पात्र उसने अपने आगे रखा हुआ था, उसे उठा कर उसकी पीठ के पीछे रख दिया और जा कर लोगों के बीच ही बैठ गये।

जैसे ही सूर्य उदय हुआ, उस साधु ने आहिस्ता आहिस्ता आंखे खोली, अपने आप को सीधा किया और अपने आस पास बैठे लोगा को, जो कि उसकी बातें सुनने के बहुत आतुर थे, देखकर बोला------ जो भी यहां है उनको मेरा आर्शीबाद। मुझे यह बताने में बहुत खुशी है कि स्वर्ग में बहुत हंसी खुशी और उत्सव का महोल है। विष्णु और ईन्द्र बहुत प्रसन्न मुद्रा में आपस में बातें कर रहे थे। अपसराये खुशी से झूम रही थी। आज का दिन आप सब के लिये बहुत ही अच्छा रहेगा। अब कल फिर मिलेंगे। यह कह कर वह पैसों वाला पात्र उठाने के लिये आगे बढ़ा। पात्र को वहां न पा कर एक दम बहुत परेशान हो गया। और लोगों से पूछने लगा

तभी गुरू जी उठे और बोले-----ऐसा लगता है कि स्वर्ग का तो पता रखते हो अपने आस पास का नहीं। अपने पीछे देखो, पात्र वहीं है। साधु हैरान था और गुरू जी को घूर-घूर कर देख रहा था उसे पहली वार कोई ऐसा व्यक्ति मिला था जिस ने उसके खेल को पकड़ लिया था। लोग गुरू जी कि बात समझ गये थे और खिल-खिला कर हंस रहे थे। साधु ने आव देखा न ताव और वहां से भागने की सोची

इस बात को तो 500 साल से भी अधिक हो गये हैं पर हमारे देश में अन्धविश्वास और पाखण्ड बढ़े ही हैं, घटे नहीं हैं और इस की लपेट में अनपढ़ ही नहीं पढ़ा लिखा तवका उस से भी अधिक हैं

विदेषों में कई स्थानों पर खुले बाजार में आपको ऐसी मुद्राओं में व्यक्ति अपनी कला, शक्ति का प्रयोग करते दिख जायेंगे। पर उनका मक्सद केवल अपने गुजारे के लिये कुछ घन प्राप्त करना होता है। वे कभी अपने आपको ईष्वर का ऐजेन्ट या चमतकारी बाबा के रूप में दिखा कर लोगों को लूटते नहीं।

निश्कर्ष यह है कि इन योगिक शक्तियों का अध्यात्मबाद से कोई सम्बन्ध नहीं। अध्यात्मबाद है भौतिकबाद से उपर उठना। बह तभी सम्भव है जब व्यक्ति ईश्वर की दी हुई सम्पदा को भी त्यागपूर्ण ढंग से भौगता है। वह लोभ, अंहकार और संग्रह करने की प्रबृति से उपर उठ चुका होता है। इस संसार की हर वस्तु को ईश्वर की सम्पदा मानकर ही भोगता है। यह योगिक शक्तियां भोग का साघन भी बन सकती है और ईश्वर तक पहुंचने का भी। पर आम व्यकित यह देखे कि इन योगियों ने कौन सा रास्ता अख्तयार किया है। श्रेय मार्ग अर्थात दूसरों के कल्याण का मार्ग या प्रेय मार्ग। श्रेय मार्ग है, जैसा कि स्वामी दयानंद और महात्मा हंसराज ने अपनाया था तो उनका अनुयाई बन जायें। और प्रेय मार्ग है तो अन्धाधुन्ध उनके पछे न लगे।

आखरी बात --एक निराकार ईश्वर को मानना और ऐसे अन्धविश्वासों से दूर रहना, सेवा द्वारा कल्याणकारी मार्ग पर चलना और विश्व बन्धुत्व की भावना होना ही आर्य समाजी होने की निशानी है।

M. : 9217970381

बेकसूर व्यक्तियों को सजा क्यूं ?

पहलगांव में 28 प्रयटकों को बहुत ही बर्बतापूर्ण ढंग से मारा जाना बहुत ही दुखी करने वाली घटना है। जिन्होने भी इस घटना को ईलजाम दिया चाहे वह संघटन है, देश है या फिर अपने ही आदमी है उनको सजा देना बहुत ही आवश्यक है। इस की जांच पड़ताल हो रही है और सकार जो उचित कदम है डठाएगी। यही धर्म है, यही न्याय है और यही आतंकवाद से निपटने का ढंग है।

परन्तु अभी जो कुछ भी सामने आया उसे देखकर मन में ख्याल आता है कि बेकसूर व्यक्तियों को सजा क्यूं ? चाहे वह हमारे देश के है या फिर पाकिस्तान के। जैसे ही घटना हुई । पहले भारत ने और तत्पश्चात पाकिस्तान ने दोनो दंशों के नागरिकों के विजा रद कर दिए व दो दिनों में ही अपने वतन लौटने का आदेश पारित कर दिया। कौन है यह लोग ? हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में इस समय 25 करोड़ के करीव मुसलमान हैं इनमें बहुत से की रिश्तेदारियां व सम्बन्ध पाकिस्तान में है। इसी तरह पाकिस्तान के मुसलमानों की रिश्तेदारियां व सम्बन्धी भारत में है। आपस में विवाह शादियां होती रहती हैं जो कि स्वभाविक भी हैं। यह भी सत्य है कि दोनों देशों के आपसी सम्बन्ध ठीक न होने की वजह से वीजा मिलने में ही महीनो साल लग जातें है। ऐसे में जब भाई बहन के पास आता है, बहन भाई के पास जाती है, बेटी पिता के पास जाती है, नई शादी के वाद दुल्हन शोहर के पास है और दो दिन में वतन वापिस जाने का आदेश दे दिया जाए तो उन के दिलों पर क्या बीतेगी। शादी के बाद नागरिकता मिलने के लिए समय लगता है, जरा सोचिए उस दुल्हन का जो कि शादी के बाद भी अपने माता पिता के पास ही रह जाती है। इन में सभी मुसलमान ही नहीं हिन्दु भी है जिनको सालों बाद अपने रिश्तेदारों को मिलने का वीजा मिलता है अपने धार्मिक स्थानों पर जाने का मौका मिलता है। कुछ की शादियां भी दूारे वतन में होती है।

इन में एक श्रेणी वह भी है जो कि मैडिकल वीजा लेकर ईलाज करवाने भारत आतें है। भारत के लिए न केवल फकर की बात है परनतु आय का साधन भी है। उनको भी दो दिन में बापिस जाने के आदेश दे दिऐ गए।

दोनों देशों में व्यापार भी चलता है। हजारों लोग इस में जुड़े हुए होते हैं व अपनी जीविका कमाते है, चाहे व्यापारी है, टरांसपोरटर है या माल ढोने वाले कुली। एक आदेश में ही उनकी जीविका खत्म हो जाती है। व्यापारियों का माल भी रूक जाता है और पैसे भी। हमारी न्यायव्यवस्था जिन सिद्धान्तों पर टिकी है उस में एक यह भी है----- चाहे दस दोषी बरी हो जाएं पर बेकसूर व्यक्ति को सजा नहीं मिलनी चाहिए। जब हम इस सिद्धान्त को सामने रखते हैं तो क्या ऐसा नहीं लगता कि हम बेकसेरों को सजा देते है।

एक तरफ तो हम भाइ घनईया के गुणगाण करते हैं जिन्होने गुरू गोविन्द सिंह के आदेश पर लड़ाई के मैदान में जख्मी शत्रुओं को पानी पिलाया व मरहम पटटी की दूसरी और कुछ भी कदम लेते हुए यह नहीं सोचते कि उसका हजारों लाखों बेकसूरों पर क्या असर पड़ेगा । यह इस लिए होता है क्योंकि सलाहकार भय के कारण शासक को ठीक सलाह नहीं दे पाते। परन्तु यह मानवता पर प्रहार है।

ओउम् सहृदयंसांमनस्यमविद्वेशं कृणोमि वः।
अन्या अन्यमभि हर्यतवत्सं जातांमवाघ्न्या।।

मनमोहन कुमार आर्य

अथर्ववेद का मन्त्र परिवार में हृदयों व मनों की एकता पर प्रकाश डालता है। यह एक प्रकार से सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार तथा धरती को स्वर्ग बनाने का आधार है।

इस मन्त्र का शब्दार्थ इस प्रकार है। हे गृहवासियो ! मैं परमात्मा, तुम्हारे लिए सहृदयता अर्थात् परस्पर सहानुभूति तथा प्रेमपूर्ण हृदय का, मन में विचारों तथा संकल्पों की एकता का, तथा परस्पर बिना किसी वैर भाव के रहने का उपदेश करता हूं।

एक दूसरे को वैसे ही चाहो और प्रेम करो जैसे उत्पन्न हुए बछड़े से गाय करती है। इस मन्त्र में परम पिता परमात्मा पहला उपदेश यह देते हैं कि हे गृहवासियों ! तुम एक दूसरे के साथ सहृदयता का व्यवहार करो अर्थात् परस्पर सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार करो। दूसरे के दुःख को दूर करना और उसे सुख पहुंचाना, यह सहृदयता का भाव है। सहृदयता का अर्थ है हृदय का एक हो जाना। गृहवासियों के देह चाहे भिन्न–भिन्न हैं परन्तु उन सब के हृदय एक हो सकते हैं। जब सब के हृदय एक हो जाते हैं जो दूसरे का दुःख भी अपना दुःख लगता है। यह भावना सहृदयता की भावना है।

उदाहरण के लिये दो सहेलियां साथ बैठी रो रही थी। अध्यापिका आई तो उसने पहली से पूछा–––––तुम रो क्यों रही हो? उसने उततर दिया–––मेरे माता जी बहुत बिमार हैं। तभी अध्यापिका ने साथ वाली लड़की से पूछा–––––और तुम क्यों रो रही हो? उसने उत्तर दिया––––––मैं अपनी सहेली के दुख से दुखी हूं। यह है सहृदयता की भावना ।

हमारे प्रेरणा के स्रोत परमात्मा हमें दूसरा उपदेश "सांमनस्य" का देते हैं। सांमनस्य श्शब्द का अर्थ है मन की एकता का होना। मन प्रतिनिधि है विचारों का और संकल्पों का। विचारभेद तथा संकल्पभेद परस्पर के विरोध तथा विशमता के कारण बन जाते हैं। जहां हृदय मिले हुए होते हैं वहां विचारों तथा संकल्पों की विशमता भी कम हो जाती है, वहां एक दूसरे के विचारों और संकल्पो का उचित मान तथा आदर करने की ओर झुकाव रहता है। गृहवासियों में एक ओर जहां परस्पर सहृदयता का भाव होना चाहिये वहीं उन में सांमनस्य का भी भाव होना चाहिये। इससे गृहस्थ स्वर्ग

धाम बनता है और गृहस्थ से रोग, शोक, दुःख व अशान्ति दूर भाग जाते हैं।

जिन परिवारों में यह दो भावनायें होती हैं वहां वैर भाव नहीं रहता और प्रेम का वातावरण बन जाता है। आपस में वैर का या द्वेशका भाव ऐसे व्यक्तियों में जड़ नहीं पकड़ता जहां कि सहृदयता और सांमनस्य के बीज बोए गये हों। गृहस्थ के प्रत्येक सदस्य को चाहिये कि वह एक दूसरे के संग और साथ की उग्र कामना करें। एक दूसरे से मिलने–जुलने के अभिलाशी हों। इस से परस्पर प्रेमभाव ब सजयता रहता है। परस्पर न मिलने–जुलने से प्रेम की मात्रा कम होती जाती है। इसलिये सभी गृहवासियों को एक दूसरे के साथ रहने के लिए उग्र कामना करनी चाहिये। यह वेद का मन्त्र सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार तथा धरती को स्वर्ग बनाने का आधार है।

यदि हम वेदों का स्वाध्याय करेंगे तो हम वेदों में बहुमूल्य रत्नोंको प्राप्त कर सकते हैं। वेदों की सर्वोपरि महत्ता के कारण हमारे ऋषियों ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया और इसे मानवमात्र के कल्याण के लिये वेदों का रूप दिया।

196 चुक्खूवाला– देहरादून–248001 फोन:09412985121

असामानता

गरीब मीलों चलता है रोटी कमाने के लिए,
अमीर मीलों चलता है उसे पचाने के लिए।

किसी के पास खाने के लिये एक वक्त की रोटी नही,
किसी के पास एक रोटी खाने का वक्त नही।

एक लाचार है, इस लिये बिमार है।
एक बिमार है, इस लिये लाचार है।।

कौई परिजनों के लिये रोटी छोड़ देता है।
तो कौई रोटीं के लिये परिजनो को छोड़ देता है।

श्रेष्ठ कर्म क्या है ?

जो कर्म परमात्मा को अपर्ण करके और आस्क्त हुए बिना किया जाता है वह श्रेष्ठ कर्म है। ऐसा कर्म करने वाला गन्दे जल में कमल के पते की भान्ति पाप से लिप्त नहीं होता। कहने का तात्पर्य यह है कि संसार के सब पदार्थों को त्यागमय भाव से भोगो पर इनके साथ आसक्त न हों। यही श्रेष्ठ कर्म है

बिभिन्नता में प्रेम से रहना, आज के जीवन की आवश्यकता है

नीला सूद

अध्यात्मवाद का किसी के जीवन में सब से बड़ा योगदान यह होता है कि व्यक्ति विकिट या ऐसी परस्थितयों में जीने की योग्यता प्राप्त कर लेता है, जिस का उस को अनुमान नहीं होता या जो परस्थित उसके अनुकूल नहीं होती। उदाहरण के लिए आज से 50 वर्ष पूर्व तक विवाह के बाद पत्नि से यह उमीद की जाती थी कि वह अपने आप को पति या ससुराल वालों के अनुसार ढ़ाल लेगी। उसके अपने माता पिता भी उसको यही सीख देकर भेजते थे । 99 प्रतिशत विवाहों में यह होता ही था। चाहे पति पत्नि की आदतों व योग्यता में कितना भी फर्क क्यों न हो परन्तु पत्नि अपने आप को, अपनी जीवन शैली को ससुताल के अनुसार बना लेती थी।

जैसे जैसे शिक्षा का प्रसार होने लगा व घर में बेटी को वही ईज्जत का स्थान मिलने लगा जो पहले बेटे का ही होता था, वह भी पढ़ लिख कर घर में बैठने के स्थान पर किसी व्यवसाय में जाने लगी और कमाने वाली सदस्य बन गई। अब शादी के बाद उसका होने वाला पति भी यह उमीद करने लगा कि वह घर में रह कर घर का काम देखने की बजाए किसी व्यवसाए में लग कर घर की आय बढ़ाए। यही नहीं, स्त्री भी घर की चार दिवारी से वाहर निकल कर अपने हुनर व शिक्षा के अनुसार घर , समाज व देश की प्रगती का हिस्सा बनना चाहती है। आप उसे चाह कर भी घर की चार दिवारी में नीं रख सकते।

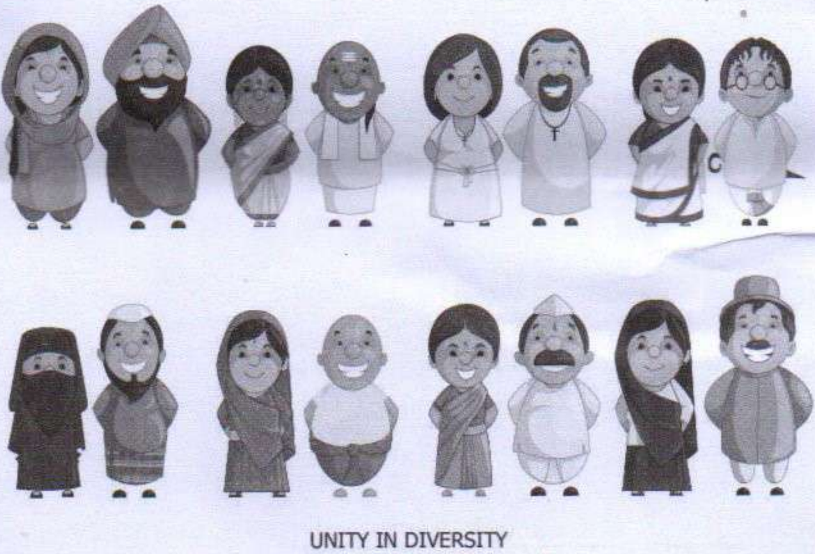

UNITY IN DIVERSITY

ऐसे में नव विवाहित पति व पत्नि का जीवन आज से 50 साल पहले से एकदम अलग हो गया है। अब वे मित्र है, एक दूसरे के पूरक हैं व पति पत्नि भी है। सब से बड़ा परिवर्तन हुआ है पति व लड़की के ससुराल वालों के दुष्टिकोण में । उन्हें भी पता लग गया है कि अपनी बहु को ईज्जत व प्यार देना होगा तभी घर की किश्ती ठीक चलेगी। कोई भी प्रश्न करेगा कि इसमें अध्यात्मवाद ने क्या किया? सब कुछ समय की जरूरत ने किया। यहां हम भूल जातें हैं कि शिक्षा स्वभाविक रूप से व्यक्ति को अध्यात्मिक बना देती है, किसी को कम तो किसी को अधिक। व्यक्ति में स्वभिमान, दूसरों को समझना, दूसरों के लिए आदर, खास कर बडों के प्रति आदर भाव होना, स्वेदनशीलता, उदारपन सब को साथ लेकर चलने की योग्यता व दूसरों के प्रति प्यार, शिक्षा से ही आता है। यह शिक्षा चाहे स्कूल कालेज में मिले या धार्मिक सत्संग में। धार्मिक सत्संग में एक चीज जो व्यक्ति सीखता है वह है कि ईश्वर के सिवाय सब अल्पज्ञ हैं। यही हालत परिवार की भी है, सभी सदस्य अल्पज्ञ है सब हुछ न कुछ जीनते हैं परन्तु सबकुछ कोई नहीं जानता। जब परिवार के सदस्य इस बात को समझ जातें हैं तो दूसरों से अपेक्षाएं भी कम हो जाती है व सहयोग की भावना आ जाती हे। यही कुछ बातें हैं जो

कि विभिन्नता में भी प्रेम से रहना सिखा देती हैं। यदि किसी कारण से परिवार में यह बातें नहीं है तो खिंचाव होगा व प्रेम का स्थान अशांति ले लेती है।

यही सब कुछ समाज व देश पर लागू होता है। छोटे देशों में बिभिन्नता कम होती है परन्तु भारत जैसे बड़े देश में बिभिन्नता अधिक होना स्वभाविक है क्योंकि अलग अलग धर्मो, सामुदायों व जातियों के लोग रहते हैं। यही नहीं यह राजशाही नहीं बल्कि लोकतन्त्र है। देश का सविधान है व सविधान ने सब को मूल अधिकार दिए हैं। यह मूल अधिकार किसी भी नागरिक को समानता, अपने धर्म को पालन करने व आगे फैलाने का, निडर हो कर अपने विचार देने का, जीवन व जीवन की स्वतन्त्रता का अधिकार देता है। इस लोकतन्त्र की सही परिक्षा यही है कि धर्म या जाति के बल पर अधिक संख्या वाला वर्ग दूसरों की भावनाओं व अधिकारों की कदर करे। हर समय अपने विचारों व निर्णयों को थोपने की कोशिश न करे। कम संख्या वाले वर्ग को हीन भावना से न देखे। हमारे देश का धर्म के आधार पर अंग्रेजी सरकार ने बिभाजन किया परन्तु हमारे उस समय के नेताओं खासकर महात्मा गांधी ने यह चाहा कि मुसलमानों को निकालकर या बलपूर्वक पाकिस्तान न भेजा चाहें बल्कि जैसे पहले हिन्दु मुसलमान साथ रहते थे वैसे ही रहें इसलिए अधिक मुसलमान यहीं पर रह गए। आज वे हमारी जनसंख्या का 20 प्रतिशत हिस्सा है । आज कोई कितना भी चाहे वे जांएगे नहीं न ही आप बल से उनको भेज सकते है।। इसलिए अच्छा न हो हम जैसे परिवार में भिन्नता होते हुए भी एक दूसरे के साथ रहने का रास्ता निकाल लेते हैं वैसे ही देश में भी एक साथ प्यार से रहने का रास्ता निकाल लें। इस के लिए वही करना होगा जो परिवार में करते हैं, एक दूसरे की भावनाओं का आदर, अपने विचार दूसरे पर थोपने की जगह दूसरे की भी सुने व बीच का रास्ता निकालें, हर समय यह उमीद न करें की दूसरा भी हमारी तरह ही बन जाए। आपकी देशभक्ति की परिभाषा चाहे कुछ भी हो पर सभी पर सब कुछ थोपना सही नहीं। यदि हम एक बड़े दल या वर्ग के रूप में यह नहीं कर पा रहे तो अशातिं ही होगी व देश का नुकसान होगा। हम वहां तक नहीं पहुंच पाऐंगे जहो होना चाहिए था। हर चीज के लिए चीन देश पर हमारी निभर्रता इसी कारण से है। परिवार में तलाक की वात होती है तो देश में अलग होने की बात होगी। चाहे गाांधी या नेहरू गलत थे पर अब उनको कोसते रहने से या अपनी असफलताओं के लिए उनको दोष देना गलत होगा। बुद्विमता इसी में है कि जो परिस्थितयां बन गई है उसी में शातिं पूवर्क रहकर सब को साथ लेकर सभी कि उन्नती को उदेश्य बनाया जाए।

9465680686

निमे देहि निते दधे (यजु ३/५०)

हे प्रभो! आप का दिया आपको समर्पित है /स्वीकार कीजिये ।

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः ।

एवा मे प्राण मा बिभेः द्य अथर्व. 2/15/1

भावार्थ : – यह आकाश और पृथिवी आदि लोक परमेश्वर के नियम पालन से अपने 2 स्थान और मार्ग में स्थिर रह कर जगत् का उपकार करते हैं द्य ऐसे ही मनुष्य ईश्वर की आज्ञा मानने से पापों को छोड़ कर और सुकर्मों को कर के सदा निर्भय और सुखी रहता है ।

DR. O P SETIA

वैदिक विद्वान

मलिन मन से न तो परलोक ही सँवरता है और न इहलोक ही

सीताराम गुप्ता

लल्लेश्वरी अथवा ललद्यद कश्मीरी भाषा की सुप्रसिद्ध संत कवयित्री हैं। उनका काल कबीरदास से कुछ पूर्व का है। हिंदी साहित्य में जो स्थान कबीर को प्राप्त है कश्मीरी साहित्य में वही स्थान लल्लेश्वरी या ललद्यद को हासिल है। इस समानता का एक प्रमुख कारण है दोनों के साहित्य में धर्म व आध्यात्मिकता के नाम पर आडंबर व कर्मकांड का स्पष्ट विरोध। दोनों ने ही मन की पवित्रता अथवा शुद्धि पर बल दिया है। कबीर कहते हैं :

कबिरा मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर,

पाछे-पाछे हरि फिरे कहत कबीर कबीर।

अपनी आत्मा रूपी नाव को संसार रूपी अथाह समुद्र से पार ले जाने के संघर्ष को व्यक्त करते हुए ललद्यद भी कहती हैं :

आमि पन सोदरस नावि छस लमान, कति बोज़ि दय म्योन म्यति दियि,

तारआम्यन टाक्यन पो ज़न श्रमान, ज़ुव छुम ब्रमान गरॅ गछ़ हा।

मैं अपनी आत्मा रूपी नाव को संसार रूपी अथाह समुद्र से पार लगाने के लिए कच्चे धागे से खींचे जा रही हूँ। परमात्मा मेरी विनती सुनें और मुझे पार उतारें। लेकिन मेरा श्रम उसी तरह निष्फल होता चला जा रहा है जैसे कच्ची मिट्टी का बरतन पानी को सोख लेता है। फिर भी मेरा मन जाने को लालायित हो रहा है।

हम सब संसार रूपी सागर को ही पार करना नहीं चाहते हैं अपितु जीवन में भी सफलता चाहते हैं। हम अपने कार्यक्षेत्र में भी सफलता चाहते हैं इसमें भी कोई संदेह नहीं लेकिन इसके लिए कुछ योग्यताओं अथवा साधनों का होना अनिवार्य है। योग्यताओं अथवा साधनों के अभाव में किसी भी प्रकार की सफलता असंभव है। इस दिशा में हमारे प्रयास अधूरे रहने के कारण ही हम अपेक्षित सफलता पाने से वंचित रह जाते हैं। चाहे आध्यात्मिक उन्नति की बात हो अथवा भौतिक उन्नति की हम हर हाल में उसके लिए लालायित रहते हैं लेकिन जब तक दृढ़ संकल्प रूपी रस्सी हमारी जीवन–नौका से नहीं बँधेगी हम आगे नहीं जा पाएँगे।

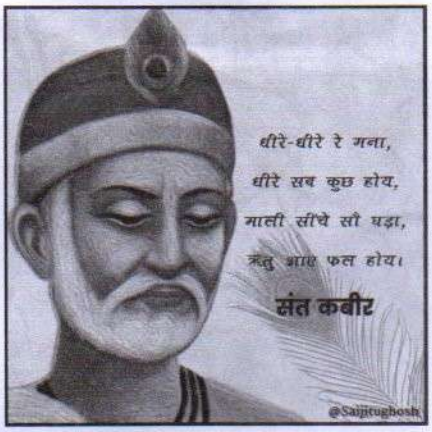

ललद्यद कहती हैं कि हमारे प्रयास तो मिट्टी के कच्चे बरतन बनाने जैसे हैं जिन में पानी रुक ही नहीं सकता। कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाकर पहले उन्हें अच्छी तरह से सुखाता हैं। फिर उन्हें आँवे में पकाता है। पकने के बाद ही बरतन सही प्रकार से इस्तेमाल के योग्य बनते हैं। पके हुए बरतन में रखने पर न तो कोई वस्तु खराब ही होती है और न बरतन ही गलता है। वह वस्तु को न तो सोखता ही है और न बाहर निकालता है। हमारा मन भी जब तक कच्चा है उसमें उपयोगी भावों का संचय संभव नहीं और यदि संचय कर भी लिया जाए तो उनमें विकार पैदा होने की संभवना बनी रहती है। हमारा मन भी जब एक पके हुए बरतन के समान हो जाता है तो ही हमें भवसागर को पार करने अथवा जीवन में सफलता प्राप्त

करने में कोई कठिनाई नहीं आएगी।

इस संदर्भ में कविवर बिहारी का एक दोहा भी कम विचारणीय नहीं। वैसे तो बिहारी श्रृंगार के कवि हैं लेकिन उनके कई दोहों में भक्ति, नीति और अध्यात्म पर बहुत गहरा चिंतन मिलता है। उन्होंने भक्ति विषयक अनेक सुंदर दोहों की रचना की है लेकिन साथ ही बाह्याडंबरों का स्पष्ट विरोध भी उनके दोहों में देखा जा सकता है। बिहारी का एक दोहा है :

जपमाला छापा तिलक सरै न एकौ कामु,

मन काँचे नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु।

अर्थात् माला जपने व पहनने से तथा छापा और तिलक लगाने से कोई काम पूरा नहीं होता। कहने का तात्पर्य ये है कि इस प्रकार के पाखंडों व आडंबरों से न तो ईश्वर की प्राप्ति होती है और न जीवन में अन्य क्षेत्रों में ही सफलता मिलती है।

जब तक मन कच्चा है तब तक उपर्युक्त सारे नाच अथवा क्रियाकलाप अर्थात् कर्मकांड व बाह्याडंबर निरर्थक हैं। उनका कोई लाभ नहीं। अब प्रश्न उठता है कि मन का कच्चापन क्या है? मन की एकाग्रता का अभाव ही मन का कच्चापन है। अर्थात् जब तक मन चंचल है और आसानी से विषय–वासनाओं की ओर दौड़ता है हम ईश्वर की सच्ची उपासना नहीं कर सकते। यदि ईश्वर की उपासना करनी है तो मन को चंचलता से मुक्त करके उसे विषय–वासनाओं से दूर रखना होगा। और ये तभी संभव है हम पाखंडों से दूर रहें व अपने मन को पूर्णतः एकाग्र करें। केवल मन की एकाग्रता द्वारा ही राम को पाया जा सकता है व इसी के द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

अब एक और प्रश्न उठता है कि ललद्यद के अनुसार मन रूपी बरतन को कैसे पकाएँ कि वो उपयोगी बन जाए। मन रूपी बरतन को पकाने या मजबूत करने के लिए साधना की ज़रूरत होती है। मन चंगा तो कठौती में गंगा। ध्यान की भट्ठी में जब मन को पकाया जाता है तो मन का सारा मैल जल जाता है। मन गंगाजल की तरह निर्मल हो जाता है। विषय–विकार नष्ट हो जाते हैं। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ आदि विकार समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकार का पवित्र मन सुंदर सकारात्मक विचारों को ग्रहण कर उन्हें सुरक्षित रखने में सक्षम होता है। सकारात्मक भावों से युक्त मन न केवल भवसागर पार करवाने में सहायक होता है अपितु वर्तमान जीवन को सुंदर बनाने का भी एकमात्र यही उपाय है। हम प्रायः परलोक की बात बड़े विश्वास के साथ करते हैं और परलोक को सँवारने के लिए कोई कसर भी नहीं रख छोड़ते। हमारा सारी चिंताएँ व प्रयास उसी के लिए रहता है।

वास्तविकता ये है कि परलोक तो दूर हम अगले क्षण के विषय में भी नहीं जानते। फिर प्रश्न उठता है कि यदि हम परलोक को सँवारने के लिए इतने उद्विग्न व तत्पर रहते हैं तो शेष बचे जीवन को सँवारने के लिए उतने तत्पर क्यों नहीं रहते? संदेश यही है कि हम न केवल परलोक के सुधार के लिए अत्यधिक लालायित हों अपितु शेष जीवन के सुधार के लिए भी अवश्य प्रयत्नशील रहें। हम अज्ञात जीवन के आनंद की चाह में वर्तमान जीवन के आनंद को उपेक्षित कर देते हैं जो हमारी सबसे बड़ी भूल है। हमारा यही अज्ञान अधूरा प्रयास है। अज्ञान से मुक्त होने पर ही हमारे सारे प्रयास सार्थक हो सकते हैं। हर अगला क्षण ही नवजीवन है, परलोक है, यदि इस बात को ध्यान में रखकर हम साधना करेंगे तो निश्चित रूप से जीवन में उत्कृष्टता उत्पन्न होगी और हम उस उत्कृष्टता को अनुभव भी कर पाएँगे।

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

DR PANKAJ JAIN DISTRIBUTED COPIES AND BISCUITS IN MEMORY OF HIS FATHER

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 76 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

एक अनोखी व असधार आर्युवैदिक दवाई

मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Jammu-2542205, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

SARVJIT

BABLOO SHARMA

CHARU JAIN

J L KHURANA

CHITKARA MADAN LAL

MUKESH CHANDER KHULLAR

DAVINDER KUMAR CHATHLEY

O P SETIA

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2025-2027

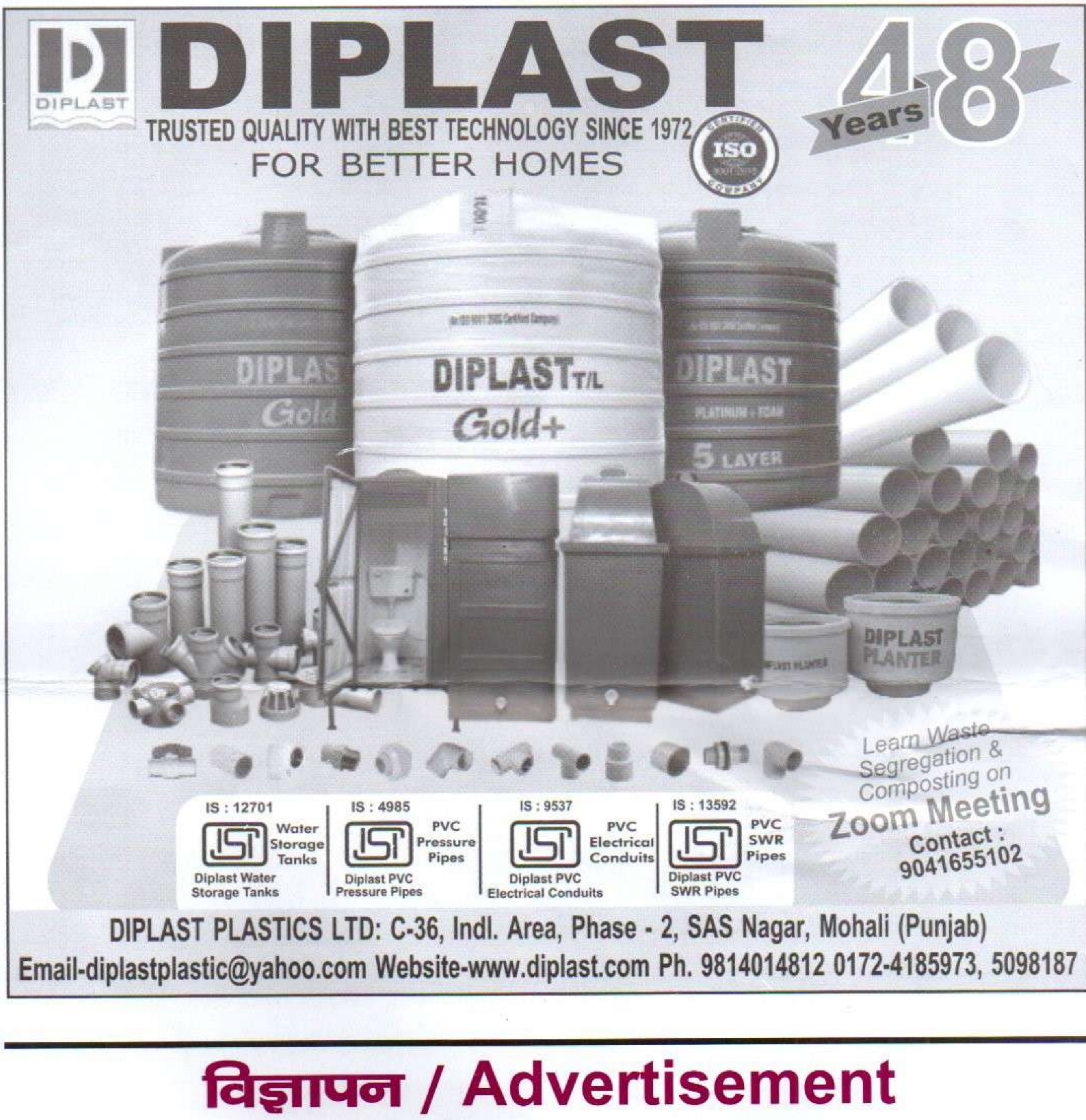

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
921790381, 9465680686